डा० करुणा राय
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
श्री गुरु गोविन्द सिंह कॉलेज
पटना सिटी
ई-मेल - Koruna-1812@Yahoo.co.in

हिन्दी प्रतिष्ठा खंड - 1
द्वितीय पत्र

'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी का कलात्मक वैशिष्ट्य

आपके पाठ्यक्रम में जितनी कहानियाँ निर्धारित हैं सभी का कलात्मक वैशिष्ट्य ई-कंटेन्ट के माध्यम से आपको भेजा जा चुका है। यह अंतिम कहानी है। इसका पाठन कक्षा में हो चुका है। उसपर आधारित यह ई-कंटेन्ट आप सभी के लिए प्रस्तुत है। इसके लेखक राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह हैं। यह बिहार के निवासी थे। इन्होंने राजा होते हुए भी किसानों के हित के लिए आंदोलन भी किया और साहित्य सेवा भी की। लक्ष्मी और सरस्वती दोनों की कृपा इनपर थी। इसके फलस्वरूप इन्होंने कई उपन्यास और कहानियों की रचना की। उनके कहानी संग्रह हैं — 'कुसुमांजलि', 'अपना-पराया', 'गांधी टोपी', 'धर्मधुरी' आदि। उपन्यासों के नाम हैं — 'राम-रहीम', 'पुरुष और नारी', 'सूरदास', 'संस्कार', 'पूरब और पश्चिम' तथा 'चुंबन और चांटा'। कथा-जगत में अपनी अत्यन्त लुभावनी शैली के कारण हिंदी कथा साहित्य में वे 'शैली-सम्राट' के रूप में स्मरण किये जाते हैं। 'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी का प्रकाशन 1913 ई० में 'इंदु' में हुआ था।

'कानों में कंगना' एक मार्मिक प्रेम कहानी है। यह मनुष्य के विवेक को जागृत करने वाले घटनाक्रम का संयोजन कर एक पथभ्रष्ट नवयुवक और भोली भाली वनकन्या किरन की प्रेम कथा का वर्णन है। इसमें वासना (कुछ पाने की उत्कट इच्छा) और प्रेम का अंतर स्पष्ट किया गया है। यह एक दुखांत प्रेम कथा है। यह स्त्री की स्थिति को भी उजागर करती है। स्त्री का जीवन सुखी होगा अथवा नहीं इसका निर्णय उसके जीवन में आये पिता-पति-पुत्र जैसे पुरुष करते हैं। किरन एक योगीश्वर की पुत्री थी जहाँ धर्म ग्रंथों का पाठ करने के लिए नरेन्द्र गया था। हृषिकेश के जंगलों में प्राकृतिक सौंदर्य के मध्य इन दोनों के मध्य आकर्षण उत्पन्न हुआ। किंतु मर्यादित तरीके से उनका जीवन चलता रहा। अध्ययन के पश्चात नरेन्द्र ने गुरु दक्षिणा के रूप में वस्त्र, स्वर्ण मुद्राएँ तथा कंगन योगीश्वर को भेंटस्वरूप दिये। योगीश्वर ने सबकुछ लौटा दिया किंतु किरन कंगन उठा ले गई। उसी कंगनों को वह कानों में पहन कर बैठी थी। कहानी की शुरुआत इसी दृश्य पर आधारित संवाद से होती है। जब नरेन्द्र बताता है कि उसे कलाइयों में पहना जाता है और धीरे-धीरे उन्हें पहना भी देता है तो योगीश्वर के सांसारिक ज्ञान कपाट खुल जाते हैं। वे किरन का हाथ नरेन्द्र को सौंप कर गहन तपस्या के लिए चल पड़ते हैं। वैवाहिक जीवन के दो सुखमय वर्षों के बीतने के पश्चात नरेन्द्र एक नर्तकी पर मुग्ध हो जाता है। इस मोह में उसके धन-प्रतिष्ठा प्रेम सब कुछ स्वाहा हो जाता है और एक दिन ऐसा भी आता है कि उसके पास नर्तकी का मोल चुकाने को कुछ भी नहीं रह जाता। वहाँ से निराश वापस लौटकर वह किरन से गहनों की माँग करता है। किरन उसे निराश नहीं करती। वह नरेन्द्र को सांत्वना देते हुए कहती

है कि- 'हाँ, अभी भी उसके पास कुछ गहने हैं।' नरेन्द्र उत्कट होकर पूछता है- 'क्या है, जल्दी दो!' तो किरन अपने मुख से अवगुंठन हटा कर कहती है- "वही, कानों में कंगना।" इतना कहते-कहते उसके प्राण शरीर को छोड़ जाते हैं और निराशा, वेदना, अपमान, छल, को झेलते-झेलते किरन के जीवन में जो निराशा व्याप्त हो गई थी उसका भी अंत हो जाता है।

'कानों में कंगना' कहानी का आरंभ और अंत एक ही घटना के उल्लेख से होता है। ऐसा लेखक ने जानबूझकर किया है। प्रथम उल्लेख में किरन के भोलेपन का जिक्र है और अंतिम उल्लेख में अपने प्रेम के लिए किए गये अनोखे त्याग का। इस तरह कहानी के आरंभ और अंत में लेखक ने एक विशिष्टता उत्पन्न कर दी है। इसके अतिरिक्त कहानी में प्राकृतिक सौन्दर्य का भी कई स्थलों पर उल्लेख है। हृषीकेश के वन में 1913 ई० के पहले जो प्रकृति का वैभव फैला हुआ था उसका वर्तमान समय में हम सिर्फ अनुमान लगा सकते हैं। हालांकि लेखक को उस समय भी घटते हुए प्राकृतिक धरोहरों का ध्यान था — 'अब ऐसे वन नहीं, जहाँ कृष्ण गोलोक से उतरकर दो घड़ी वंशी की टेर दें। ऐसे कुटीर नहीं जिनके दर्शन से रामचन्द्र का भी अन्तर प्रसन्न हो, या ऐसे मुनीश नहीं ~~जिनके दर्शन~~ जो धर्मधुरन्धर धर्मराज को भी धर्म में शिक्षा दें।'

कहानी तीन खंडों में विभक्त है। प्रथम खंड में किरन और नरेन्द्र के कंगन पहनने पहनाने की घटना वर्णित है; दूसरे खंड में किरन को योगीश्वर द्वारा नरेन्द्र को सौंपने की घटना का चित्रण है और तीसरे खंड में नरेन्द्र के गृहस्थ जीवन में पतन की घटना व्याप्त है। शुरुआत में उस गृहस्थ जीवन की सुखी झलकियाँ हैं और अंत में उनका क्रूर अवसान दर्शाया गया है। कहानी में नरेन्द्र की आँखें खुलती हैं पर देर से। इतिहास में वर्णित दुष्यंत-शकुंतला प्रसंग का उल्लेख कर लेखक भारतीय संस्कृति से एक उदाहरण दे रहा है पर उस प्रसंग से यह काफी अलग है — 'दुष्यन्त ने अँगूठी पहचान ली। भूली शकुन्तला उस पल याद आ गई; लेकिन दुष्यन्त सौभाग्यशाली थे, चक्रवर्ती राजा थे — अपनी प्राणप्रिया को आकाश-पाताल छानकर ढूँढ निकाला। मेरी किरन तो इस भूतल पर न थी कि किसी तरह प्राण देकर भी पता पाता। परलोक से ढूँढ निकालूँ — ऐसी शक्ति इस दीन-हीन मानव में कहाँ?' इस तरह लेखक ने उस परंपरा से जुड़ाव और अलगाव दोनों का मार्मिक चित्र खींचा है।

कहानी 'मैं' की शैली में लिखी गई है। अर्थात कथा लेखक स्वयं को इस कहानी के पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है। यह अनुभवों की प्रामाणिकता को दर्शाने के लिए किया गया है। जितनी प्रामाणिक 'स्वानुभूति' होती है उतनी और कोई अनुभूति कहाँ? — "मैं भी निरन्तर जलने लगा, लेकिन ज्यों-ज्यों जलता गया, जलने की इच्छा जलती रही।" इस स्वीकारोक्ति में 'जलना' शब्द के कलात्मक प्रयोग से जो चित्र पाठकों के समक्ष उभरता है वह अपूर्व है साथ ही स्वयं के बारे में कही जाने से इस उक्ति में प्रभाव उत्पन्न करने की विशिष्ट क्षमता है। अनुप्रास के प्रयोग से इस गद्य में भी पद्य का वैभव उतरकर सामने आया है। इस कहानी में ऐसे काव्यमय स्थल बिखरे पड़े हैं।

वातावरण निर्माण के लिए लेखक राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह ने प्राकृतिक शोभा का साभिप्राय प्रयोग किया है। उनकी भाषा में मुहावरों का चटखदार प्रयोग मिलता है। इतिहास से लेकर पौराणिक प्रसंगों के द्वारा अपनी प्रेम कथा उन्होंने पुष्ट किया है। कृष्ण, दुष्यंत और नूरजहाँ सभी इस कहानी में उपस्थित हैं। दुष्यंत प्रसंग का उपयोग लेखक ने प्रेम को भूलने, पाने और पुनः प्राप्ति के सुख का चित्रण करने के लिए किया है। कृष्ण का उल्लेख उन्होंने प्रेम के वशीभूत होकर समाज के बंधनों को तोड़ने के ~~लिए~~ प्रसंग में किया है और नूरजहाँ का उल्लेख उसकी अदा से किरन के भोलेपन की तुलना के लिए किया गया है। "जब माखन चुरानेवाले ने गोपियों के सर के मटके को तोड़कर उनके भीतर किले को तोड़ डाला या नूर-जहाँ ने अंचल से कबूतर को उड़ाकर शाहंशाह के कठोर हृदय की धज्जियाँ उड़ा दीं, फिर नदी के किनारे बसन्त-वल्लभ रसाल पल्लवों (आम के वृक्ष के नीचे) की छाया में बैठी किसी अरूप बालिका की वह सरल स्निग्ध भंगिमा एक मानव-अन्तर पर क्यों न दौड़े।"

'कानों में कंगना' का शीर्षक पाठकों में उत्सुकता जगाता है और कहानी में घटनाओं के संयोजन से उसे सार्थक सिद्ध करता है। भाषा काव्यमयी है इसका उल्लेख नरेन्द्र के दृष्टिकोण से किया किया जा चुका है। पात्रों का चरित्र चित्रण कथानायक गया है। किरन का चरित्र एक समान है। भोली भाली किरन और नववधू किरन की साज-सज्जा में भले ही अंतर हो, हृदय की निष्कलुषता एक जैसी ही है। नरेन्द्र के चरित्र में उतार चढ़ाव है। धर्म ग्रन्थों के अध्ययन से लेकर किन्नरी के रूप जाल में फँसने तक उसका चरित्र गिरता ही गया है अंत में उसे अपनी भूल ज्ञात होती है पर तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। यह कहानी हिन्दी साहित्य की प्रारंभिक कहानियों में उत्कृष्ट मानी जाती है। इसका कारण सिर्फ इसका कथानक ही नहीं इसकी प्रस्तुति भी है। इस दृष्टि से इस कहानी को पढ़ें। ऐसा इस कहानी के मर्म तक पहुँचने के लिए आवश्यक है।

mobile no - 9431881251